प्रकाशित समाचार

दिनांक : मंगलवार,04,अक्तूबर,2016

पृष्ठ संख्या :08

डेली हिन्दी मिलाप

DAILY HINDI MILAP

Hyderabad

तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा आयोजित

चेन्नई, 3 अक्तूबर

(मिलाप ब्यूरो)

तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय में गत 14 से 28 सितंबर तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इसके उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। रचनात्मक लेखन, रचनात्मक विज्ञापन, गायन, मूक पहेली और नाटक जैसी प्रतियोगिताओं में कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेताओं को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह गत 30 सितंबर को आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में केरल के कोच्चि स्थित कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रो. एन. मोहनन उपस्थित हुए।

अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.पी. दाश, वित्त अधिकार डॉ. बी.बी. मिश्र, परीक्षा नियंत्रक डॉ. ए. रघुपति, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसवीएसएस नारायण राजू एवं विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी, शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआरत सरस्वती वंदना से हुई। अर्थ शास्त्र विभाग के अक्षया ने हिन्दी व तमिल में स्वागत गीत गाकर अतिथियों का स्वागत किया। राजभाषा अनुभाग की ओर से कुलपति प्रो. ए.पी. दाश ने समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. एन. मोहनन का शॉल, तंजाउर पेंटिंग एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मान किया। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति, वित्त अधिकारी, परीक्षा नियंत्रक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष को क्रमशः प्रो. एवीएसएस नारायण राजू, एम.पी. बालमुरगन, वेंकट कृष्णन एवं बी. त्यागराजन ने शॉल देकर सम्मानित किया। कुलपति प्रो. ए.पी. दाश ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा, 'हिन्दी इसलिये बढ़ी नहीं कि इस देश में उसके बोलने वालों की संख्या अधिक है, बल्कि वह इसलिये बढी है, क्योंकि इस देश की जनता के दिल और दिमाग को वह जोड़ने का काम करती है।' उन्होंने हिन्दी के बिगड़ते रूप पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा, 'साथ ही बाजार की भाषा बनने की प्रक्रिया में इसकी मूल विकृति ही नष्ट हो रही है। आज विश्व के अधिकांश विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जरूर जाती है, लेकिन उसका तौर-तरीका या तो अंग्रेजी युक्त है या कठिन शब्दों से भरपूर।'

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. एन. मोहनन ने समापन भाषण में कहा कि संगीत और भाषा एक-दूसरे को जोडने का काम करते हैं। उन्होंने हिन्दी भाषा को अधिक व्यापक बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान के लगभग हर हिस्से में हिन्दी बोली और समझी जाती है। संविधान में राजभाषा के रूप में शामिल है। उन्होंने हिन्दी भाषा को समृद्ध करने के लिये प्रांतीय भाषाओं से सहयोग ग्रहण करने की बात कही। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. एवीएसएस नारायण राजू ने अतिथि एवं विद्वानों का स्वागत किया। हिन्दी पखवाड़ा समारोह के संयोजक एवं सहायक प्रो. (हिन्दी) डॉ. आनंद पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अवसर पर सहायक प्रो. डॉ. विनायक काले एवं मधुलिका को समारोह के आयोजन में सहयोग के लिये विशेष धन्यवाद दिया गया।